International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-9, Issue-2 March-April- 2022
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

मुस्लिम महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका : एक समाजशास्त्री अध्ययन

Arshi

Research Scholar Department of Sociology

Meerut College, Meerut

Prof. Amarjeet Singh Malik

Department of sociology

Meerut College, Meerut

सार

आत्म-सुधार के सबसे महत्वपूर्ण साधनों में से एक शिक्षा है। यह लोगों के जीवन स्तर को लोगों के रूप में बढ़ने में मदद करके और उन्हें आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में सफल होने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल से लैस करके उठाता है। सामाजिक सशक्तिकरण में शिक्षा तक पहुंच, स्वास्थ्य देखभाल, पौष्टिक भोजन आदि जैसी चीजें शामिल हैं, जबकि आर्थिक सशक्तिकरण से तात्पर्य गरीबी को खत्म करने और आय बढ़ाने जैसी चीजों से है। महिलाओं की स्वतंत्रता को न केवल इन कारकों से बल्कि अन्य कारकों द्वारा भी मापा जाता है, जैसे कि उनकी स्वतंत्र रूप से आगे बढ़ने और अपना पेशा चुनने की क्षमता। मुस्लिम महिलाओं की वास्तविक स्थिति पर एक अध्ययन आवश्यक है क्योंकि उनके सशक्तिकरण का वर्तमान स्तर अभी भी स्पष्ट नहीं है। उनके अधिकारों को कुछ अतिवादी पार्टियों (हिंदू और मुस्लिम दोनों) द्वारा कई उदाहरणों में गलत तरीके से प्रस्तुत किया गया है। यह पाया गया है कि जहां गैर-मुसलमानों की मुस्लिम महिलाओं के बारे में गलत धारणा है, वहीं ज्यादातर मुसलमान खुद अपनी स्थिति के बारे में सच्चाई से बेखबर हैं। भारत में अधिकांश मुसलमान इस्लाम और भारत के धर्मनिरपेक्ष संविधान के तहत अपने कानूनी संरक्षण के बारे में भ्रमित हैं।

मुख्य शब्द- अधिकारिता, शिक्षा, विकास, अल्पसंख्यक, मुस्लिम महिलाएं

प्रस्तावना

आज की दुनिया में, 'महिला' शब्द विभिन्न प्रकार के लोगों और व्यवसायों को संदर्भित कर सकता है। महिलाएं न केवल नए लोगों को जन्म देती हैं बल्कि समग्र रूप से समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसलिए 21वीं सदी में महिलाओं को

सशक्त बनाना एक महत्वपूर्ण कार्य बन गया है। यह आंदोलन महिलाओं के आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास और आंतरिक शक्ति के स्तर को बढ़ावा देना चाहता है ताकि वे अपने जीवन के बारे में अपने फैसले खुद कर सकें। शिक्षा महिलाओं को सशक्त बनाने के सबसे आवश्यक साधनों में से एक है क्योंकि यह उन्हें आवश्यक जानकारी, क्षमताओं और आत्म-आश्वासन से लैस करती है। कई साल पहले से मुस्लिम महिलाओं का जीवन के हर पहलू में फायदा उठाया जाता रहा है। इसलिए, यह सुनिश्चित करना एक राष्ट्र की जिम्मेदारी है कि मुस्लिम महिलाओं की गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक अवसरों तक पहुंच हो।

महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका

महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए शिक्षा को लगातार सबसे प्रभावी उपकरण के रूप में स्वीकार किया जाता है। शिक्षा महिलाओं को आत्म-आश्वासन दे सकती है कि उन्हें दुनिया पर नियंत्रण करने की आवश्यकता है। वे उचित शिक्षा की सहायता से विश्व के आर्थिक और सामाजिक-राजनीतिक विकास दोनों में शामिल हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त, शिक्षा यह गारंटी देगी कि वे पुरुषों के साथ-साथ पूरी तरह से और स्वतंत्र रूप से भाग लेंगी। महिलाएं शिक्षा के माध्यम से भी कार्यबल तक पहुंच बना सकती हैं। आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के लिए महिलाएं वाणिज्यिक और सार्वजनिक क्षेत्रों के साथ-साथ स्वयं सहायता समूहों में रोजगार पा सकती हैं। इसके अतिरिक्त, यह स्वतंत्रता समाज के भीतर अपने निर्णय लेने की उनकी क्षमता का समर्थन कर सकती है। सामान्य तौर पर, शिक्षा महिलाओं को उनकी विशिष्टता और समान अधिकारों का दावा करने में सहायता कर सकती है ।

भारत की मुस्लिम महिलाएं

2011 की जनगणना के अनुसार, 17.22 करोड़ मुसलमान भारत की कुल आबादी का 14.23% हैं। सच्चर समिति के पिछले आकलन के अनुसार, 31% मुसलमानों को गरीबी की सीमा से नीचे माना जाता है। इस देश में मुस्लिम समुदाय गरीबी, बेरोजगारी और अशिक्षा से त्रस्त है। मुस्लिम समुदाय में, महिलाएं लगभग 48% आबादी बनाती हैं। जब भारत में महिला सशक्तिकरण के मुद्दे की बात आती है, तो ये मुस्लिम महिलाएं सबसे कमजोर समूहों में से एक का प्रतिनिधित्व करती हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में 42.7% मुसलमान निरक्षर हैं। भारत में, 50% से अधिक निरक्षर मुस्लिम महिलाएं हैं। साक्षरता की यह कमी महिला सशक्तिकरण के प्रयासों में बाधा बन सकती है।

नेशनल सैंपल सर्वे 2009-2010 के अनुसार, भारत में 100 में से 11 मुसलमान उच्च शिक्षा प्राप्त करते हैं। यह जानकारी उच्च शिक्षा में मुसलमानों की दयनीय स्थिति को प्रदर्शित करने के लिए पर्याप्त है। सच्चर समिति की रिपोर्ट के अनुसार, 2004-2005 में केवल 4.4% मुसलमानों ने स्नातक कार्यक्रमों में दाखिला लिया। 2001 की जनगणना से पता चलता है कि भारत में 14.1% मुस्लिम महिलाएँ कार्यरत हैं। रोजगार पर एनएसएस के 55वें दौर के सर्वेक्षण, 2000 के अनुसार, केवल 6.03% स्नातक मुस्लिम महिलाएं शहरी क्षेत्रों में और 1.22% ग्रामीण क्षेत्रों में खोजी गई थीं।

पिछड़ी स्थिति के कारण

- **सामाजिक-सांस्कृतिक चुनौतियां**

पितृसत्ता का दबदबाः मुस्लिम समुदाय पर आज भी पितृसत्ता की बेड़ियों का दबदबा है। महिला जीवन और सपनों को पुरुष सदस्यों द्वारा नियंत्रित किया जाता है। एक मुस्लिम परिवार में बालिका की शैक्षिक संभावना पूरी तरह से परिवार के पुरुष सदस्यों की इच्छा पर निर्भर करती है।

धार्मिक कठोरता: इस्लाम की कठोर प्रकृति महिलाओं की स्वतंत्रता के लिए एक कठिन स्थिति बनाती है। पुरुषों की मान्यता के बिना महिलाओं को किसी भी प्रकार की स्वतंत्रता की अनुमति नहीं है।

लैंगिक असमानता: लैंगिक असमानता के उदाहरण मुस्लिम समुदाय में अधिक प्रचलित हैं जहां एक लड़की को केवल पुरुष परीक्षण पूरा करने के लिए खरीदा जाता है।

सामाजिक दमन: मुस्लिम माता-पिता अक्सर अपनी लड़कियों की शिक्षा को रोकने के लिए समाज से दबाव डालते हैं। वे यह सोचने पर विवश हो जाते हैं कि अधिक शैक्षणिक योग्यता से उनकी बालिका के विवाह की संभावनाएं बाधित हो सकती हैं।

बाल विवाह: भारत में, मुस्लिम लड़कियों के लिए उनकी किशोरावस्था में शादी करना एक आम बात है। सरकारी रिपोर्ट के मुताबिक इस देश में 47% लड़कियों की शादी किशोरावस्था में ही कर दी जाती है।

बाल श्रम : गरीब परिवार अपनी लड़कियों को नौकरानी के रूप में काम करने के लिए भेजते हैं। इन बच्चों को औपचारिक शिक्षा से वंचित कर दिया जाता है।

मानव तस्करी: राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) की रिपोर्ट है कि पिछले पांच वर्षों में मानव तस्करी के मामलों में 38.3% की वृद्धि हुई है। गरीबी और बेरोजगारी इन क्षेत्रों में बालिकाओं की तस्करी का रास्ता खोलती है। कई बार तो अभिभावक अपनी मर्जी से अपनी लड़की बेच देते हैं।

सामाजिक भेदभाव: हमारे समाज में, एक लड़की का जन्म केवल पुरुष प्रधान दुनिया की जरूरतों को पूरा करने के लिए होता है। एक बालिका को कभी भी अपनी स्वतंत्र पहचान बनाने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाता है। मुस्लिम समुदाय दूसरों से अलग नहीं है।

- **आर्थिक चुनौतियां**

गरीबी: **सच्चर कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार**, 31% **मुस्लिम आबादी गरीबी रेखा के नीचे है। गरीबी अभिभावकों को अपनी लड़कियों को स्कूल भेजने के लिए प्रोत्साहित नहीं करती है।**

बेरोजगारी: **हमारी औपचारिक शिक्षा प्रणाली नौकरी के अवसर सुनिश्चित नहीं करती है। यह मुस्लिम अभिभावकों की अपनी बालिकाओं की शैक्षिक संभावना में रुचि की कमी का एक बड़ा कारण है।**

- **ढांचागत चुनौतियां**

शिक्षा की महँगाई: **आरटीई मुफ्त शिक्षा की बात करता है। लेकिन**, **वास्तव में**, **वर्तमान शिक्षा प्रणाली का संबद्ध व्यय बहुत अधिक है। गरीबी रेखा से नीचे के परिवार**, **शिक्षा की लागत वहन करने में विफल रहते हैं**, **जिसके परिणामस्वरूप आरटीई की विफलता और ड्रॉपआउट में वृद्धि होती है।**

बुनियादी ढांचे की कमी: **आरटीई की बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भारत को अधिक स्कूलों और शिक्षकों की आवश्यकता है। समय की आवश्यकता को पूरा करने के लिए स्कूलों के बुनियादी ढांचे को भी संशोधित करने की आवश्यकता है।**

व्यावसायिक शिक्षा की गुंजाइश का अभाव: **आर्थिक आवश्यकता के कारण**, **अधिकांश गरीब मुस्लिम परिवार प्रारंभिक रोजगार की तलाश करते हैं**, **जिसे उचित व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से सुनिश्चित किया जा सकता है। लेकिन**, **स्कूलों और सरकार के प्रयास की कमी के कारण इस जिले में व्यावसायिक शिक्षा की अत्यधिक उपेक्षा की जाती है।**

उद्देश्य

इस पत्र के मुख्य उद्देश्य हैं:

1. **प्राथमिक**, **माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा स्तर पर मुर्शिदाबाद जिले की मुस्लिम महिलाओं में साक्षरता दर का पता लगाना।**
2. **विकास के राजनीतिक**, **आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों में मुर्शिदाबाद जिले की मुस्लिम महिलाओं की भागीदारी की सीमा का अनुमान लगाना।**

तरीका

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा 2015-16 में किया गया राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-IV (NFHS-4), 2011 से भारत की जनगणना और भारत से चुनाव आयोग के आँकड़े इस अध्ययन में उपयोग किए गए डेटा के प्राथमिक माध्यमिक स्रोत हैं।

महिला सशक्तिकरण एक अवधारणा है, एक गुप्त चर है जिसका मूल्यांकन प्रॉक्सी या संकेतकों का उपयोग करके किया जाना चाहिए क्योंकि इसे सीधे मापा नहीं जा सकता है। इसके अलावा, क्योंकि यह एक बहुआयामी प्रक्रिया है, एक एकल तत्व के लिए एक महिला के जीवन के मूलभूत पहलुओं को सटीक रूप से पकड़ना असंभव है (बीगल एट अल।, 2001; पिट एट अल।, 2006)। इस लेख ने वर्तमान शोध के अनुसार भारत में मुस्लिम महिलाओं के संदर्भ में इस ढांचे के भीतर महिला सशक्तिकरण के कई संकेतकों को विकसित और जांचा है। इस अध्ययन में भारत में मुस्लिम महिलाओं के लिए महिला सशक्तिकरण के कई सूचकांकों की जांच प्रतिशत, अनुपात विश्लेषण आदि जैसी सीधी सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोग करके की गई है ।

परिणाम और चर्चा

जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया था, सशक्तिकरण प्रक्रिया को मापने के लिए चुनौतीपूर्ण है। अधिकांश लेखकों ने महिला सशक्तिकरण के स्तर का आकलन करने के लिए संकेतक के रूप में राजनीतिक प्रतिनिधित्व, कार्य भागीदारी और शैक्षिक प्राप्ति का उपयोग किया है, जिसे निर्णय लेने के अधिकार के विकास, आंदोलन की स्वतंत्रता में वृद्धि, स्वायत्तता और पक्ष में दृष्टिकोण में बदलाव के रूप में परिभाषित किया गया है। महिलाओं के बीच लैंगिक समानता की।

इस अध्ययन में, मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा तक पहुंच, कार्यबल में भागीदारी, और राजनीतिक प्रतिनिधित्व को सशक्तिकरण के संभावित स्रोतों के रूप में उपयोग किया गया है, जबकि एनएफएचएस-तृतीय से घरेलू निर्णय लेने और घर के बाहर स्वतंत्र रूप से यात्रा करने की उनकी क्षमता पर सबूत के रूप में प्रस्तुत किया गया है। सशक्तिकरण का। इन मेट्रिक्स की तुलना अन्य विश्वास समूहों की महिलाओं से भी की जाती है ताकि यह आकलन किया जा सके कि इन क्षेत्रों में मुस्लिम महिलाएं कितनी पीछे हैं।

शिक्षा प्राप्ति

मुसलमान राष्ट्र में शैक्षिक रूप से सबसे कम उन्नत समूहों में से एक हैं, और मुस्लिम महिलाओं का शैक्षिक स्तर पुरुषों की तुलना में भी कम है। 1986 से भारत सरकार की शिक्षा नीति के अनुसार, नव-बौद्ध और मुस्लिम (विशेष रूप से मुस्लिम महिलाएं) अखिल भारतीय स्तर पर सबसे खराब शैक्षिक परिणामों वाले समुदाय थे। इसके अतिरिक्त, 1997 से अल्पसंख्यकों के कल्याण पर गवर्नर्स कमेटी की रिपोर्ट में कहा गया है कि मुसलमान शैक्षिक रूप से वक्र के पीछे हैं, केवल 15% जनसंख्या साक्षर है।

अल्पसंख्यक महिलाओं की साक्षरता दर काफी खराब है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि मुस्लिम महिलाओं की साक्षरता मुस्लिम समुदाय के विकास और भलाई के लिए महत्वपूर्ण है, और यह कि सरकार और समुदाय के नेताओं को शिक्षा के इस क्षेत्र पर विशेष ध्यान देना चाहिए। तालिका 1 मुस्लिम महिलाओं द्वारा प्राप्त संबंधित शैक्षिक स्तरों को सूचीबद्ध करती है।

तालिका 1 और उससे अधिक जनसंख्या के लिए धार्मिक समुदाय और लिंग के अनुसार शिक्षा का स्तर (%)

धर्म	साक्षर			मैट्रिक / माध्यमिक			प्री-यूनिवर्सिटी			स्नातक और ऊपर		
	पी	एम	एफ	पी	एम	एफ	पी	एम	एफ	पी	एम	एफ
हिंदू	63.60	70.77	55.97	9.00	10.61	7.28	6.62	7.77	5.39	5.98	7.24	4.64
मुसलमान	57.28	62.40	51.89	6.33	7.16	5.45	4.44	4.95	1.90	2.76	3.41	2.07
ईसाई	74.34	76.77	71.97	10.08	10.72	9.45	10.32	10.24	10.39	8.85	8.98	8.72
सिख	67.51	71.32	63.29	14.78	16.64	12.71	8.25	8.89	7.55	6.40	6.10	6.73
बौद्ध	71.83	77.87	65.58	10.93	12.29	9.51	8.61	10.02	7.15	6.18	7.51	4.80
जैन	86.43	87.86	84.93	15.48	16.13	14.81	14.05	15.15	12.90	25.65	27.66	23.55
अन्य	50.34	59.38	41.38	5.12	6.55	3.70	3.26	4.16	2.36	2.16	2.75	1.56

तालिका 1 के अनुसार, मुस्लिम समुदाय में, महिलाओं की साक्षरता दर सबसे कम है। जैन में महिला साक्षरता का सबसे बड़ा प्रतिशत (84.93%) है , इसके बाद ईसाई, बौद्ध, हिंदू और मुस्लिम हैं। यह प्रारंभिक नुकसान उच्च शैक्षिक स्तरों, जैसे मैट्रिकुलेशन, प्री-यूनिवर्सिटी और स्नातक स्तर के अध्ययन पर अधिक स्पष्ट किया जाता है। मैट्रिक और हाई स्कूल स्तरों में मुस्लिम महिलाओं का प्रतिशत एक बार फिर सबसे कम है। केवल 5.45% मुस्लिम महिलाएं अपनी माध्यमिक या उच्च विद्यालय की शिक्षा पूरी करती हैं, जबकि 7.25% हिंदू, 9.4% ईसाई, 12.71% सिख, 9.51% बौद्ध और 14.81% जैन महिलाएं इस समूह में आती हैं।

उच्च शिक्षा में मुस्लिम महिलाओं और अन्य धार्मिक समुदायों के बीच असमानता अधिक स्पष्ट रूप से सामने आती है। ईसाई महिलाओं (10.39%), सिख महिलाओं (7.55%), बौद्ध महिलाओं (7.15%), और जैन महिलाओं (12.90%) की तुलनात्मक रूप से उच्च दर की तुलना में केवल 1.90 प्रतिशत मुस्लिम महिलाएं प्री-यूनिवर्सिटी शिक्षा पूरी करती हैं। अन्य धार्मिक समूहों की महिलाओं की तुलना में डॉक्टरेट और उससे ऊपर की डिग्री वाली मुस्लिम महिलाओं का प्रतिशत भी काफी कम है।

यह डेटा मुस्लिम समुदाय के समग्र और मुस्लिम महिलाओं के विशिष्ट शैक्षिक पिछड़ेपन को दर्शाता है। मुस्लिम महिलाओं की निम्न शैक्षिक प्राप्ति के लिए कई कारकों को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है, जैसे कि उनकी निम्न सामाजिक आर्थिक स्थिति,

समुदाय और माता-पिता की सीमाएं और अक्सर उदासीन व्यवहार, "पर्दा" परंपरा, धार्मिक शिक्षा को प्रोत्साहन और धर्मनिरपेक्ष शिक्षा का निषेध, यौवन के बाद जल्दी शादी, और घरेलू कर्तव्यों के लिए बेटियों को बनाए रखना। कई शोधों के अनुसार, मुस्लिम महिलाओं को समकालीन शिक्षा को आगे बढ़ाने से हतोत्साहित किया गया क्योंकि बड़ी संख्या में मुसलमानों वाले क्षेत्रों में कुछ स्कूल, विश्वविद्यालय और अन्य शैक्षणिक संस्थान थे।

कार्य भागीदारी और रोजगार

कई सरकारी और निजी अध्ययनों में पाया गया है कि मुसलमानों में किसी भी सामाजिक-धार्मिक समूह की तुलना में काम में भागीदारी का प्रतिशत सबसे कम है। यह मुस्लिम महिलाओं के लिए विशेष रूप से सच है, जिनकी नौकरी में भागीदारी की सबसे कम दर महानगरीय क्षेत्रों में देखी जाती है। 2006 की सच्चर समिति की रिपोर्ट के अनुसार, एससी और एसटी के अपवाद के साथ, अन्य सभी सामाजिक-धार्मिक समूहों की तुलना में मुसलमानों का आम तौर पर राष्ट्रीय स्तर पर सबसे कम औसत प्रति व्यक्ति व्यय (एमपीसीई) है। इसके अतिरिक्त, एससी और एसटी के अपवाद के साथ, मुसलमानों में अन्य सभी सामाजिक-धार्मिक समूहों की तुलना में गरीबी (हेडकाउंट) की उच्च घटना है। इसी तरह, मुस्लिम महिलाओं की स्थिति पर राष्ट्रीय महिला आयोग के अध्ययन (हमीद, 2000) से पता चलता है कि मुसलमानों में सामान्य जनसंख्या की तुलना में बेरोजगारी और मजदूरी की अक्षमता की दर काफी अधिक है। मुस्लिम श्रमिकों की दयनीय कामकाजी परिस्थितियों और नौकरी के पैटर्न को अक्सर उनकी दयनीय स्थिति के लिए दोषी ठहराया जाता है। यह इस तथ्य से भी संबंधित है कि अन्य सामाजिक-धार्मिक समूहों की महिलाओं की तुलना में मुस्लिम महिलाओं के लाभप्रद रूप से नियोजित होने की संभावना कम है। तालिका 2 अखिल भारतीय स्तर पर विभिन्न सामाजिक-धार्मिक समूहों (16-64 वर्ष) के लिए गतिविधि की स्थिति द्वारा कर्मचारियों (प्रिंसिपल और सहायक) के प्रतिशत वितरण को दर्शाती है ।

तालिका 2 श्रेणियों के लिए गतिविधि स्थिति द्वारा श्रमिकों (प्रिंसिपल और सहायक) का प्रतिशत वितरण , 16-64 वर्ष (वर्ष 2018-19 के लिए)

सामाजिक-धार्मिक श्रेणियाँ	ग्रामीण महिलाओं			शहरी महिलाओं		
	खुद-कार्यरत	नियमित	अनौपचारिक	खुद-कार्यरत	नियमित	अनौपचारिक
हिंदू-यू.सी	72.35	7.23	20.42	36.86	56.91	6.24
हिंदू-ओबीसी	57.76	3.72	38.53	44.76	31.46	23.78
हिंदू-एससी	37.81	5.00	57.19	31.94	36.61	31.45

हिंदू-अनुसूचित जनजाति	50.38	2.09	47.52	25.31	34.49	40.20
मुस्लिम-ओबीसी	66.69	3.03	30.28	67.41	17.16	15.43
मुस्लिम-जनरल	62.19	4.80	33.01	53.96	26.88	19.16
मुस्लिम-सभी	64.11	4.08	31.81	58.90	22.63	18.47
अन्य अल्पसंख्यकों	60.47	9.34	30.20	33.65	52.37	13.98
सभी व्यक्तियों	55.06	4.58	40.36	40.48	40.13	19.40

तालिका 2 से पता चलता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में, मुस्लिम और हिंदू-यूसी महिला कार्यकर्ता स्व-नियोजित गतिविधियों में केंद्रित हैं और नियमित नौकरियों में मुस्लिम महिलाओं की भागीदारी कई अन्य सामाजिक-धार्मिक श्रेणियों की तुलना में बहुत कम है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि नियमित नौकरियों में मुस्लिम महिलाओं का प्रतिनिधित्व 'अन्य अल्पसंख्यकों' से कम है। इसी तरह, शहरी क्षेत्रों में नियमित श्रमिकों के रूप में मुस्लिम महिलाओं के रोजगार के आंकड़े वेतनभोगी नौकरियों में उनकी मामूली उपस्थिति का संकेत देते हैं, जबकि स्वरोजगार में अन्य सामाजिक-धार्मिक श्रेणियों की तुलना में मुस्लिम महिला श्रमिकों का काफी अधिक हिस्सा देखा जा सकता है । ये आंकड़े पिछले कई अध्ययनों के अनुरूप हैं जो बताते हैं कि नियमित नौकरियों में, खासकर सरकार, सार्वजनिक क्षेत्र और बड़े निजी क्षेत्र में मुसलमानों की हिस्सेदारी बहुत कम है।

निर्णय लेने में भागीदारी

एक प्रमुख घटक निर्णय लेने की क्षमता है जो उनके स्वयं के जीवन की स्थितियों को प्रभावित करती है। हम मुख्य रूप से NFHS-4 के डेटा का उपयोग मुस्लिम महिलाओं की उनके व्यक्तिगत जीवन और घरेलू मामलों के बारे में निर्णय लेने की क्षमता की जांच करने के लिए करते हैं। NFHS-4 ने वर्तमान में विवाहित महिलाओं से तीन अलग-अलग प्रकार के निर्णयों में उनकी भागीदारी पर डेटा एकत्र किया: महिलाओं की निर्णय लेने की स्वायत्तता को मापने के लिए उनकी स्वयं की स्वास्थ्य देखभाल, महत्वपूर्ण घरेलू खरीदारी करना और परिवार या रिश्तेदारों को देखने के लिए यात्रा करना। जब पूछा गया, "मुख्य रूप से आप, ज्यादातर आपके पति, आप और आपके पति एक साथ, या कोई और?" महिलाओं से पूछा गया। इस अध्ययन से एकत्र की गई जानकारी इस बात पर विशेष जोर देती है कि धार्मिक कारक महिलाओं के निर्णय लेने को कैसे प्रभावित करते हैं, तालिका 3 में दिखाया गया है।

तालिका 3. धार्मिक पृष्ठभूमि के आधार पर निर्णय लेने में महिलाओं की भागीदारी

	को PERCENTAGE का वर्तमान में विवाहित औरत आयु 15-49 WHO आम तौर पर निर्माण विशिष्ट अकेले निर्णय या संयुक्त रूप से साथ उनका पति

धर्म	खुद का स्वास्थ्य देखभाल	मेजर बनाना परिवार खरीद	यहां जाएं परिवार या सगे-संबंधी	% WHO में सहभागिता सभी तीन फैसले	% WHO हिस्सा लेना इनमें से कोई नहीं तीन फैसले
मैं	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	वी	छठी
हिंदू	74.3	73.2	74.6	63.0	16.2
मुसलमान	72.8	72.1	71.7	60.4	17.7
ईसाई	81.2	82.3	82.8	71.0	9.2
सिख	82	73.1	79.3	67.4	11.7
बौद्ध/नव-बौद्ध	83.3	78.9	86.6	72.9	9.3
जैन	82.0	83.2	82.7	71.1	8.9
अन्य	87.0	79.9	83.5	75.5	8.2

तालिका 3 दर्शाती है कि धार्मिक संबद्धता निर्णय लेने को कैसे प्रभावित करती है। अन्य धर्मों की महिलाओं की तुलना में बौद्ध/नव-बौद्ध महिलाओं में भागीदारी सबसे अधिक और मुस्लिम महिलाओं में सबसे कम है। बौद्ध/नव-बौद्ध महिलाओं (72.9%), जैन महिलाओं (71.1%), और ईसाई महिलाओं (71.0%) के विपरीत, केवल 60.4 प्रतिशत मुस्लिम महिलाएं तीनों निर्णयों में अकेले या संयुक्त रूप से भाग लेती हैं-स्वयं की स्वास्थ्य देखभाल, प्रमुख घरेलू खरीदारी, और परिवार या रिश्तेदारों का दौरा। इसके अलावा, 17.7% मुस्लिम महिलाएं इनमें से किसी भी विकल्प में भाग लेने से बचती हैं (जैन महिलाओं की 8.9%, ईसाइयों की 9.2%, बौद्ध/नव-बौद्ध महिलाओं की 9.3%, सिख महिलाओं की 11.7% और 16.2% महिलाओं की तुलना में) हिंदू महिला)। ये आँकड़े स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि अन्य धार्मिक संगठनों की महिलाओं की तुलना में मुस्लिम महिलाएँ निर्णय लेने में सबसे कम सक्षम हैं।

निष्कर्ष

शिक्षा सभी के लिए महत्वपूर्ण है, लेकिन यह महिला सशक्तिकरण के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। पारिवारिक मामले के दबाव में मुस्लिम महिलाएं अपनी पहचान और सम्मान के प्रति जागरूक नहीं हैं। मुस्लिम महिलाओं की इतनी दयनीय स्थिति के लिए महिलाओं की पारंपरिक मान्यताओं और रूढ़िवादिता के साथ-साथ लोगों की अनुमेय गरीबी ही जिम्मेदार है। महिलाएं परिवार कल्याण के बारे में जागरूक हैं लेकिन फिर भी उन्हें पति पर निर्भर रहना पड़ता है क्योंकि ज्यादातर मामलों में वे पैसे की पहुंच से बाहर होती हैं। अध्ययन मुस्लिम महिलाओं पर अलग-अलग विचार दिखाता है। एक मत कहता है कि इस्लाम अपनी औरतों पर कई बंदिशें लगाता है और

मर्दों को ऊंचा दर्जा देता है और सत्ता मर्दों के हाथ में केंद्रित कर देता है। इस्लाम और इस्लामी कानून का मुस्लिम महिलाओं की वर्तमान वंचित स्थिति से कोई लेना-देना नहीं है। दूसरा विचार यह है कि इस्लाम और इस्लामी कानून का मुस्लिम महिलाओं की वर्तमान वंचित स्थिति से कोई लेना-देना नहीं है

संदर्भ:

[1] अवस्थी, इंदिरा- 'रूरल वीमेन ऑफ इंडिया', बीआर पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन, नई दिल्ली-1982

[2] अग्रवाल, मीनू- 'कृषि में ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक भागीदारी', आरबीएसए प्रकाशन, जयपुर-राजस्थान।

[3] रहमानी, एमकेएस- 'इस्लामिक परिप्रेक्ष्य में महिलाएं' (मुफ्ती मोहम्मद शहाबुद्दीन सबीली द्वारा अनुवादित) हज़रत अब्दुल्ला इब्ने-ए-मोसूद इस्लामिक अकादमी, हैदराबाद-2000,

[4] बरुआ, जयंत - 'पूर्वोत्तर राज्यों में महिलाएं', APPOCCUS प्रकाशन, गुवाहाटी, असम -2015

[5] अहमद, एमएफ, और सानू, एमएस (2016)। MSMEs और भारत में समावेशी विकास: वर्तमान परिदृश्य और भविष्य की संभावना। बुद्धि: एक द्वि-वार्षिक अंतःविषय अनुसंधान जर्नल, 4(2), 86-98

[6] बीगल, के., फ्रेंकेनबर्ग, ई., और थॉमस, डी. (2001)। जोड़ों के भीतर सौदेबाजी की शक्ति और इंडोनेशिया में प्रसव पूर्व और प्रसव देखभाल का उपयोग। परिवार नियोजन में अध्ययन, 32(2), 130-146।

[7] ब्रेनर, एस। (1996)। स्वयं और समाज का पुनर्निर्माण: जावानीस मुस्लिम महिलाएं और "घूंघट"। अमेरिकन एथनोलॉजिस्ट, 23(4), 673-697।

[8] जनगणना (2011), जनगणना रिपोर्ट, भारत सरकार।

[9] चक्रवर्ती, एस., और बिस्वास, सीएस (2008)। महिला सशक्तिकरण, घरेलू स्थिति और व्यक्तिगत विशेषताएँ: विकासशील देशों में उनकी अन्योन्याश्रयताएँ। चर्चा पत्र ईआरयू/2008-01। कोलकाता, भारत: आर्थिक अनुसंधान इकाई, भारतीय सांख्यिकी संस्थान।

[10] दास, एसके (2012)। जनजातीय क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण में बाधाओं का विश्लेषण: असम से साक्ष्य। एशियन जर्नल ऑफ रिसर्च इन सोशल साइंस एंड ह्यूमैनिटीज, 2(4), 61-74।

[11] इंजीनियर, एए (2001)। मुसलमान और शिक्षा। इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 36, 3221-3221।

[12] घुमन , एसजे (2003)। महिलाओं की स्वायत्तता और बाल अस्तित्व: चार एशियाई देशों में मुसलमानों और गैर-मुसलमानों की तुलना । जनसांख्यिकी, 40(3), 419-436।

[13] भारत सरकार (1986)। शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति 1986। मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली

[14] शिवलिंगप्पा , पी. और नागराज, जीएच (2011)। महिला अधिकारिता और लैंगिक समानता- एक अध्ययन। दक्षिणी अर्थशास्त्री, 50(10), 15-17

[15] सुगुना, एम। (2011)। भारत में शिक्षा और महिला अधिकारिता। मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च की अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका , 1(8), 219-317।

[16] वर्मा, जे। (2009)। लिंग, लड़कियों और महिला शिक्षा। नई दिल्ली: मुरारी लाल एंड संस.

[17] भट्ट, बीडी और शर्मा, एसआर (1992)। महिला शिक्षा और सामाजिक विकास। नई दिल्लीः कनिष्क पब्लिशिंग हाउस।

[18] मारिडुला , बी (1997)। भारत में महिलाएं: कुछ मुद्दे। नई दिल्ली: एपीएच पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन।

[19] चंद्रा, एसएस, और शर्मा, केआर (2004)। शिक्षा में अनुसंधान। नई दिल्ली: अटलांटिक प्रकाशक और वितरक।

[20] क्रेसवेल, जेडब्ल्यू (2011)। शैक्षिक अनुसंधान। नई दिल्लीः पीएचआई लर्निंग प्रा. लिमिटेड